पद २०

(राग: यमन कल्याण - ताल: दीपचंदी)

लाग लाग सख्या गुरुपायीं। तयावांचुनि तुज गति नाहीं रे।।ध्रु.।।

एक्याभावें तत्पर होऊनि । तन मन सर्वहि वाही रे ।।१।। माणिकदास

सांगतसे गुज तुज। अंगी ब्रह्मचि होई रे।।२।।